# TOP 10 QNS- ANS

## 1. सम सीमांत उपयोगिता नियम की सचित्र व्याख्या कीजिए।

उत्तर: सम सीमांत उपयोगिता का नियम विश्लेषण में उपभोक्ता का संतुलन स्पष्ट करता है।

इस नियम को ***गोसेन का दूसरा नियम*** भी कहा जाता है।

इस सिद्धांत के अनुसार 'एक उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार व्यय करेगा कि प्रत्येक वस्तु पर खर्च की गई रूचियों की अंतिम इकाई से समान सीमांत उपयोगिता प्राप्त होगी'।

**प्रो. मार्शल** के अनुसार, "यदि किसी व्यक्ति के पास ऐसी वस्तु है जिससे वह विभिन्न प्रकार से प्रयोग कर सकता है, तो वह इसका अनेक प्रयोग में इस प्रकार वितरण करेगा कि सीमांत उपयोगिता प्रत्येक में समान हो जाए"।

## सम-सीमांत उपयोगिता के कानून की मान्यताएँ

- वस्तुओं की इकाइयाँ समरूप होती हैं।
- विभिन्न इकाइयों की खपत के बीच कोई समय अंतराल नहीं।
- स्वाद, फ़ैशन, प्राथमिकताएँ और प्राथमिकताएँ अपरिवर्तित रहती हैं।
- उपभोक्ता का लक्ष्य अधिकतम संतुष्टि है।
- उपभोक्ता की आय निश्चित एवं सीमित होती है।

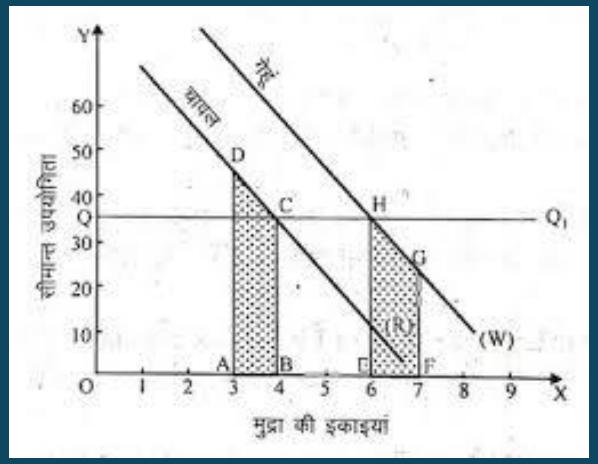

**2. निम्नलिखित से परिवर्तनीय अनुपातों के नियम के तीन चरणों की पहचान कीजिए और प्रत्येक चरण के पीछे कारण भी बताइए।**

| परिवर्तनीय आगत की इकाइयों | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
|---|---|---|---|---|---|
| कुल भौतिक उत्पादन | 10 | 22 | 30 | 35 | 30 |

उत्तर:

| परिवर्तनशील साधन (L) | TP | MP |
|---|---|---|
| 1 | 10 | 10 |
| 2 | 22 | 12 |
| 3 | 30 | 8 |
| 4 | 35 | 5 |
| 5 | 30 | -5 |

## ***उत्पत्ति के बढ़ते प्रतिफल की अवस्था***

प्रथम अवस्था में स्थिर साधन के साथ साथ जैसे जैसे परिवर्तन साधन की काई या प्रयोग में बढ़ाई जाती है, हमें बढ़ता हुआ उत्पादन प्राप्त होता है, जिसका प्रमुख कारण है कि इस स्थिति में ***औसत उत्पादकता*** और ***सीमांत उत्पादकता*** दोनों बढ़ते हैं।

## ***घटते प्रतिफल की अवस्था***

यह द्वितीय अवस्था है जिसमें औसत उत्पादन तथा सीमांत उत्पादन दोनों घटते हैं। इस अवस्था का समापन उस बिंदु पर होता है जहाँ सीमांत उत्पादन शून्य हो जाता है। किंतु कुल उत्पादन बढ़ता रहता है किंतु घटती दर से।

## ***ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था***

उत्पादन की यह तीसरी अवस्था है जिसके अंतर्गत सीमांत उत्पादन शून्य से कम होकर ऋणात्मक हो जाता है। जिसकारण से कुल उत्पादन ता घटने लगती है। इसलिए इसे ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था भी कहा जाता है।

**3. एकाधिकारी बाजार की विशेषताएं समझाइए।**

उत्तर: बाजार की एक स्थिति जिसमे वस्तु का केवल एक ही विक्रेता या उत्पादक होता है और उसका कली प्रतिस्थापन मौजूद नहीं होता है ।

**एकाधिकार बाजार की विशेषताएं :**

1. **एक मात्र विक्रेता :** सपूर्ण बाजार वस्तु केवल एक ही विक्रेता मौजूद होता है और उसका कोई निकटतम प्रतिद्वंदी नहीं होता है ।
2. **फर्म और उद्योग एक दुसरे के प्रयायवाची:** एकाधिकारी के अंतर्गत विक्रेता ही उद्योग होता है ।
3. **निकटतम स्थानापन्न का आभाव :** एकाधिकारी के नअंतर्गत वस्तु कोई भी निकटतम स्थानापन्न मौजूद नहीं होता है ।
4. **नई फर्मों के प्रवेश पर प्रतिवंध :** एकाधिकार के अंतर्गत किसी नई फर्म का प्रवेश पूर्णत: प्रतिबंधित होता है ।

5. **औसत आय और सीमांत आय वक्र :-** इसमें AR और MR दोनों की वक्र नीचे की ओर ढालू होते है ।
6. **कीमत का निर्धारण:** एकाधिकार में वस्तु की कीमत का निर्धारण विक्रेता स्वयं करता है ।
7. **कीमत विभेद :** इस बाजार में कीमत विभेद की सम्भावना होती है अर्थात विक्रेता एक ही वस्तु को अलग अलग उपभोक्ताओं को अलग अलग कीमत पर बेच सकता है ।

**4. पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएं सविस्तार समझाइए।**

उत्तर: पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएं:-

1. **क्रेता और विक्रेता की अधिक संख्या** - इस बाजार में क्रेता और विक्रेता की संख्या अधिक होती है ।
2. **समरूप वस्तु** - इस बाजार में सभी विक्रेताओं के पास समरूप वस्तुएं होती है अर्थात वस्तुओं में किसी प्रकार का कोई भी अन्तर नहीं होता है ।
3. **बाजार को दशाओं का पूर्ण ज्ञान** - क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान होता है ।
4. **कीमत का निर्धारण** - इस बाजार में वस्तुओं की कीमत का निर्धारण वस्तु की मांग और पूर्ति द्वारा बाजार में होता है ।
5. **बजार में प्रवेश एवं निकासी** - इस बाजार में कोई भी नया विक्रेता प्रवेश कर सकता है तथा कोई भी उद्योग को छोड़ सकता है ।
6. **विक्रय लागत** - इस बाजार में विक्रय लागत शुन्य होती है, क्योंकि सभी को बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान होता है इसलिए किसी प्रकार के विज्ञापन की आवश्यकता नही होत्ती है ।

**5. राष्ट्रीय आय की परिभाषा दीजिए। राष्ट्रीय आय की गणना विधिया समझाइए।**

उत्तर: राष्ट्रीय आय से अभिप्राय किसी राष्ट्र की एक वर्ष के दौरान आर्थिक क्रियाओ के परिणाम स्वरुप उत्पादित अंतिम '**वस्तुओं एवं सेवाओं**'के मौद्रिक मूल्य से होता है।

## उत्पाद विधि या मूल्य वर्धित विधि

राष्ट्रीय आय की गणना इस तकनीक का उपयोग करके वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह के रूप में की जाती है। सबसे पहले, हम एक वर्ष में किसी अर्थव्यवस्था में उत्पन्न सभी अंतिम उत्पादों और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य की गणना करते है। धन का मूल्य बाजार कीमतों पर मापा जाता है, बाजार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद (सकल घरेलू उत्पाद) कुल राशि है।

फॉर्मूला: एनएनपीएफसी = जीडीपीएमपी - मूल्यह्रास - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर + एनएफआईए, या,

एनएनपीएफसी = जीडीपीएमपी - मूल्यह्रास - शुद्ध उत्पाद कर - शुद्ध उत्पादन कर + एनएफआईए

## आय विधि

राष्ट्रीय आय की गणना इस तकनीक का उपयोग करके कारक आय के संचलन के रूप में की जाती है।

उत्पादन के मुख्य रूप से चार पहलू हैं: *श्रम, भूमि, पूंजी और उद्यमिता।* श्रम की भरपाई मज़दूरी और वेतन से की जाती है, पैसे की भरपाई ब्याज से की जाती है, ज़मीन की भरपाई किराये से की जाती है, और उद्यमिता की भरपाई लाभ से की जाती है।

इसके अलावा, विशिष्ट स्व-रोज़गार व्यक्ति, जैसे चिकित्सक, वकील और सीए, अपना पैसा और श्रम स्वयं प्रदान करते हैं। उनकी आय को मिश्रित आय कहा जाता है। इन सभी कारक आय को कारक लागत पर एनडीपी (एनडीपीएफसी) कहा जाता है।

सूत्र: राष्ट्रीय आय = किराया + मुआवजा + ब्याज + लाभ + मिश्रित आय

## व्यय विधि

चूंकि आप पहले से ही आय तकनीक से अवगत हैं, तो आइए व्यय विधि पर नजर डालें। राष्ट्रीय आय निर्धारित करने के लिए निपटान चरण के दौरान व्यय दृष्टिकोण को भी नियोजित किया जा सकता है।

यह बाजार कीमतों पर अंतिम जीडीपी खर्च की गणना करके राष्ट्रीय राजस्व निर्धारित करता है। तैयार माल पर खर्च की गई राशि को अंतिम व्यय कहा जाता है।

अंतिम उत्पाद अंतिम निवेश और उपभोग के लिए आवश्यक हैं। इसलिए, अंतिम निवेश और उपभोग की आवश्यकता सभी चार आर्थिक क्षेत्रों द्वारा उत्पन्न होती है, जिसमें घर, उद्यम, सरकार और बाकी दुनिया शामिल हैं।

सूत्र: राष्ट्रीय आय: घरेलू उपभोग + सरकारी व्यय + निवेश व्यय + शुद्ध निर्यात (निर्यात - आयात)

एनएनपीएफसी = सी + जी + आई + एनएक्स

## 6. कीन्स के रोजगार सिद्धांत की मुख्य बातें बताइये।

उत्तर; कीन्स के रोजगार सिद्धान्त की व्याख्या -

1. रोजगार प्रभावपूर्ण माँग (Effective Demand) पर निर्भर करता है;

प्रभावपूर्ण माँग = कुल उत्पादन = कुल आय = कुल रोजगार

2. प्रभावी माँग कुल माँग फलन (ADF) तथा कुल पूर्ति फलन (ASF) द्वारा निर्धारित होती है।

3. प्रभावपूर्ण माँग पर मुख्य प्रभाव कुल माँग फलन (ADF) का ही पड़ता है, क्योंकि कुल पूर्ति फलन (ASF) अल्पकाल में स्थिर रहता है।

4. कुल माँग फलन (ADF) कुल व्यय द्वारा निर्धारित होता है।

कुल व्यय तीन बातों पर निर्भर करता है -

(i) उपभोग व्यय (C), (ii) निवेश व्यय (I) तथा (iii) सरकारी व्यय (G)।

5. उपभोग व्यय (C) दो बातों द्वारा निर्धारित होता है-(i) आय का आकार, (ii) उपभोग प्रवृत्ति। उपभोग प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है - (i) औसत उपभोग

प्रवृत्ति (APC), (ii) सीमान्त उपभोग व्यय (MPC)। उपभोग प्रवृत्ति अल्पकाल में स्थिर रहती है।

6. विनियोग व्यय (I) भी दो बातों पर निर्भर करता है - (i) पूँजी की सीमान्त दक्षता (MEC) तथा (ii) ब्याज की दर (r)

7. MEC दो बातों पर निर्भर करती है - (i) पूँजी परिसम्पत्ति की पूर्ति कीमत पर तथा (ii) पूँजी परिसम्पत्ति की सम्भावित आय पर। निवेश जैसे-जैसे बढ़ाते हैं। पूँजी की सीमान्त दक्षता घटती जाती है।

8. ब्याज की दर (r) भी दो बातों से प्रभावित होती है- (i) तरलता पसंदगी तथा (ii) द्रव्य की पूर्ति। द्रव्य की पूर्ति अल्पकाल में स्थिर रहती है

9. तरलता पसंदगी के भी तीन उद्देश्य होते हैं लेन-देन उद्देश्य, सतर्कता उद्देश्य तथा सट्टा उद्देश्य।

10. लेन-देन तथा सतर्कता उद्देश्य आय (y) पर तथा सट्टा उद्देश्य ब्याज की दर पर (r) पर निर्भर करते हैं। कीन्स का मानना था कि रोजगार में वृद्धि करने हेतु यह जरूरी है कि उपभोग तथा विनियोग में वृद्धि की जाये।

## 7. विनिमय दर क्या है? अनुकूल और प्रतिकूल विनिमय दरों को समझाइए।

उत्तर: अर्थशास्त्र में यह जान लेना भी बहुत आवश्यक है कि किस समय विदेशी विनिमय दर अर्थव्यवस्था के अनुकूल तथा प्रतिकूल होती है।

**A) अनुकूल विदेशी विनिमय दर:** विदेशी विनिमय दर उस समय अर्थव्यवस्था के अनुकूल समझी जाती है जब एक विदेशी करेंसी की इकाई के बदले घरेलू करेंसी की इकाइयां कम देनी पड़े। इसे **"घरेलू करंसी का अतिमूल्यन"** भी कहा जाता है। **ऐसा केवल निम्न दशाओं में हो सकता है :**

1) देश के निर्यातों में वृद्धि से विदेशी करेंसी की पूर्ति में वृद्धि।
2) देश में विदेशी निवेश की वृद्धि से विदेशी करेंसी की पूर्ति में वृद्धि।
3) देश में विदेशी पर्यटकों तथा विद्यार्थियों के आने से विदेशी करंसी का आगमन।

ऐसी दशा में घरेलू अर्थव्यवस्था का विस्तार होता है तथा देश के उत्पादन तथा रोजगार में वृद्धि होती है।

**B) प्रतिकूल विदेशी विनिमय दर:** विदेशी विनिमय दर उस समय प्रतिकूल होती है जब विदेशी करेंसी की एक इकाई के बदले घरेलू करंसी की अधिक इकाइयां देनी पड़े। इसे **"घरेलू करंसी का मूल्य ह्रास"** भी कहा जा सकता है। इस दशा में करंसी का अवमूल्यन हो जाता है। **ऐसा केवल निम्न दशाओं में होता है :**

1) देश में आयतों की वृद्धि से विदेशी करेंसी की मांग।

2) घरेलू देश से विदेशों में अधिक निवेश।

3) घरेलू देश से विदेशों में विद्यार्थियों का अधिक जाना इत्यादि।

यह दशा देश के आर्थिक विस्तार के लिए हानिकारक होती है तथा उत्पादन एवं रोजगार की वृद्धि में बाधा बनती है।

8. भुगतान संतुलन की परिभाषा दीजिए। इसकी मुख्य मदें समझाइये।

उत्तर: **भुगतान संतुलन** एक देश का दूसरे देश के साथ एक निश्चित अवधि में किए गए आर्थिक लेनदेन या प्राप्तियां व भुगतानों का विवरण होता है।

**दृश्य मदें (Visible Goods):-** समस्त भौतिक वस्तुएं जो किसी पदार्थ से बनी होती है। जैसे: मशीने, फर्नीचर आदि

**अदृश्य मदें (Invisible Goods):-** सभी सेवाएं जिनका भौतिक अस्तित्व नहीं होता है अर्थात किसी पदार्थ की नही बनी होती है।

**पूंजीगत अंतरण (Capital Transfer):-** पूंजीगत प्राप्तियों और भुगतानो को शामिल किया जाता है।

**एकपक्षीय अंतरण:** दान, स्कालरशिप, उपहार, आर्थिक सहायता

**LIKE** AND **SHARE** THE CLASS LINK

**SUBSCRBE** THE CHANNEL

**THE ECONOMICS GURU**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**FOLLOW ME ON** *INSTAGRAM* **/ @dhalinakul**

**FOLLOW ME ON** *FACEBOOK* **/ NAKUL DHALI**

To download PDF visit WEBSITE

www.theeconomicsguru.com